IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, August 2026
Impact Factor: 8.2

21वीं सदी के हिंदी साहित्य में आस्वाद की समस्या

प्रो. विष्णु के. अग्रवाल

प्राध्यापक-हिंदी विभाग

शास. महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणिज्य (स्वशासी) महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

सारांश

21वीं सदी के हिंदी साहित्य में विषय-वस्तु, भाषा, पाठक-वर्ग और प्रकाशन-माध्यमों के स्तर पर उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं। डिजिटल माध्यम, बाज़ारवाद, अस्मिता-विमर्श, भाषिक बहुलता और त्वरित उपभोग की संस्कृति ने साहित्य के आस्वाद को जटिल बनाया है। प्रस्तुत शोध-पत्र में साहित्यिक आस्वाद की भारतीय अवधारणा तथा समकालीन हिंदी साहित्य में उसके समक्ष उपस्थित चुनौतियों का विवेचन किया गया है। निष्कर्षतः यह प्रतिपादित किया गया है कि गहन पठन, लोकतांत्रिक आलोचना और संदर्भ-सचेत पाठकीयता से साहित्य के स्वस्थ आस्वाद को विकसित किया जा सकता है।

मुख्य शब्द: आस्वाद, रस, पाठक, हिंदी साहित्य, डिजिटल संस्कृति, आलोचना, बाज़ारवाद।

प्रस्तावना

साहित्य मनुष्य के अनुभव, संवेदना और विचार का कलात्मक रूप है। वह केवल सूचना देने या मनोरंजन करने का माध्यम नहीं है, बल्कि मनुष्य के भीतर सहानुभूति, विवेक और सामाजिक चेतना का विस्तार भी करता है। किसी साहित्यिक रचना को पढ़ते हुए उसके भाव, भाषा, शिल्प और जीवन-दृष्टि के साथ पाठक का जो रचनात्मक संवाद बनता है, वही साहित्यिक आस्वाद है। भारतीय काव्यशास्त्र में आस्वाद की अवधारणा रस-सिद्धांत से संबद्ध है। भरतमुनि ने *नाट्यशास्त्र* में विभाव, अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति मानी है। अभिनवगुप्त ने रसास्वादन को साधारणीकरण की प्रक्रिया से जोड़ा, जिसमें व्यक्ति अपनी निजी सीमाओं से ऊपर उठकर कलात्मक अनुभव को सार्वजनीन रूप में ग्रहण करता है। आधुनिक हिंदी आलोचना में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने साहित्य को मानवीय करुणा और लोकमंगल

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, August 2026 Impact Factor: 8.2

से जोड़ा, जबकि नामवर सिंह ने साहित्यिक मूल्यांकन में परंपरा, इतिहास और नवीन काव्य-बोध की आवश्यकता पर बल दिया। 21वीं सदी में हिंदी साहित्य नए सामाजिक अनुभवों और नई तकनीकों के बीच विकसित हो रहा है। आज साहित्य मुद्रित पुस्तकों तक सीमित नहीं है; वह ई-पुस्तक, ब्लॉग, वेब-पत्रिका, सोशल मीडिया पोस्ट, पॉडकास्ट और ऑडियोबुक के रूप में भी पाठकों तक पहुँच रहा है। यह विस्तार साहित्य को अधिक सुलभ और लोकतांत्रिक बनाता है, किंतु इसके साथ साहित्य के आस्वाद की कुछ गंभीर समस्याएँ भी सामने आती हैं।

आस्वाद की अवधारणा

आस्वाद को केवल "आनंद" मानना पर्याप्त नहीं है। साहित्यिक आस्वाद भावात्मक, कलात्मक और वैचारिक—तीनों स्तरों पर घटित होता है। भावात्मक स्तर पर पाठक रचना के दुःख, प्रेम, संघर्ष, विडंबना या उल्लास से जुड़ता है। कलात्मक स्तर पर वह भाषा, बिंब, प्रतीक, कथानक, लय, संवाद और संरचना को ग्रहण करता है। वैचारिक स्तर पर वह रचना में निहित सामाजिक संबंधों, सत्ता-संरचनाओं, लैंगिक प्रश्नों, जाति-अनुभवों और ऐतिहासिक संदर्भों को समझता है। इस प्रकार आस्वाद निष्क्रिय उपभोग नहीं, बल्कि सक्रिय पाठकीय प्रक्रिया है। एक ही रचना का अर्थ अलग-अलग पाठकों के लिए भिन्न हो सकता है, क्योंकि प्रत्येक पाठक अपनी सामाजिक पृष्ठभूमि, भाषा, अनुभव और वैचारिक दृष्टि के साथ रचना तक पहुँचता है। किंतु इसका अर्थ यह नहीं कि साहित्यिक व्याख्या पूरी तरह मनमानी है। रचना की भाषा, संरचना और संदर्भ पाठकीय अर्थ-निर्माण को दिशा देते हैं। समकालीन हिंदी साहित्य के आस्वाद में यह प्रश्न विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि आज पाठक-वर्ग अत्यंत विविध है। महानगरों, कस्बों, गाँवों, प्रवासी समाजों, विश्वविद्यालयों और डिजिटल मंचों पर सक्रिय पाठकों की साहित्यिक अपेक्षाएँ एक जैसी नहीं हैं। इसलिए साहित्य के ग्रहण की प्रक्रिया भी बहुस्तरीय हो गई है।

21वीं सदी के हिंदी साहित्य का बदलता परिदृश्य

समकालीन हिंदी साहित्य वैश्वीकरण, उदारीकरण, उपभोक्तावाद, विस्थापन, सांप्रदायिक तनाव, बेरोज़गारी, पर्यावरणीय संकट और डिजिटल क्रांति के अनुभवों से निर्मित है। कविता में निजी जीवन की बेचैनी के साथ राजनीतिक

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, August 2026 Impact Factor: 8.2

प्रतिरोध भी है। कहानी में शहरों की अनामिता, छोटे कस्बों का संक्रमण, प्रवास, श्रम, जाति और लैंगिक असमानता के प्रश्न उपस्थित हैं। उपन्यासों में इतिहास, स्मृति, अस्मिता और बदलते सामाजिक संबंधों की जटिल संरचनाएँ दिखाई देती हैं। विशेष रूप से दलित, स्त्री, आदिवासी और किन्नर लेखन ने हिंदी साहित्य की संवेदना का विस्तार किया है। इन धाराओं ने उन अनुभवों को केंद्र में रखा जिन्हें मुख्यधारा साहित्य लंबे समय तक पर्याप्त स्थान नहीं दे पाया था। दलित साहित्य ने जाति-आधारित अपमान, संघर्ष और आत्मसम्मान की चेतना को अभिव्यक्ति दी है; स्त्री लेखन ने पितृसत्ता, घरेलू श्रम, देह, इच्छा और स्वायत्तता के प्रश्नों को नए ढंग से उठाया है। भाषा के स्तर पर भी हिंदी साहित्य अधिक बहुरंगी हुआ है। मानक खड़ी बोली के साथ भोजपुरी, अवधी, बुंदेली, मैथिली, राजस्थानी, उर्दू और अंग्रेज़ी के शब्द-प्रयोग बढ़े हैं। यह बहुलता साहित्य को जीवन के निकट लाती है, किंतु पाठक के सामने अर्थ-ग्रहण की चुनौती भी पैदा करती है।

आस्वाद की प्रमुख समस्याएँ :-

डिजिटल माध्यम और त्वरित पाठकीयता

डिजिटल माध्यम ने हिंदी साहित्य के प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वेब-पत्रिकाएँ और सोशल मीडिया मंच नए लेखकों को प्रकाशन का अवसर देते हैं तथा दूर-दराज़ के पाठकों को साहित्य से जोड़ते हैं। किंतु डिजिटल संस्कृति की मूल प्रवृत्ति गति, संक्षिप्तता और तात्कालिक प्रतिक्रिया है। साहित्य, विशेषतः कविता और गंभीर कथा-साहित्य, धैर्य, एकाग्रता और पुनर्पाठ की अपेक्षा करता है। सोशल मीडिया पर साहित्य की स्वीकृति प्रायः "लाइक", "शेयर" और "व्यूज़" से मापी जाने लगती है। इससे लोकप्रियता और साहित्यिक गुणवत्ता के बीच अंतर धुंधला हो सकता है। भावुक, सरल और तुरंत प्रभाव डालने वाली पंक्तियाँ व्यापक प्रसार पा सकती हैं, जबकि जटिल तथा बहुस्तरीय रचनाएँ कम दृश्यता के कारण उपेक्षित रह जाती हैं। आलोचक कृष्णदत्त पालीवाल ने समकालीन साहित्यिक परिदृश्य में संचार-माध्यमों के प्रभाव को साहित्यिक संवेदना और मूल्य-बोध के लिए चुनौतीपूर्ण माना है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, August 2026
Impact Factor: 8.2

बाज़ारवाद और साहित्य का वस्तुकरण

उदारीकरण के बाद हिंदी प्रकाशन-जगत में बाज़ार की भूमिका बढ़ी है। पुस्तक का प्रचार, लेखक की सार्वजनिक छवि, पुरस्कार और बिक्री साहित्यिक चर्चा को प्रभावित करने लगे हैं। यह आवश्यक नहीं कि बाज़ार और साहित्य परस्पर विरोधी हों; बेहतर वितरण और प्रचार से पुस्तकें अधिक पाठकों तक पहुँचती हैं। समस्या तब उत्पन्न होती है जब रचना का मूल्य केवल उसकी बिक्री या चर्चित होने से तय किया जाए। बाज़ार अक्सर ऐसे साहित्य को प्राथमिकता देता है जो शीघ्र बिक सके, सरल हो और तत्काल आकर्षण पैदा करे। परिणामस्वरूप प्रयोगशील, वैचारिक या कठिन साहित्य सीमित पाठक-वर्ग तक रह सकता है। यह स्थिति पाठक की रुचि को भी प्रभावित करती है, क्योंकि उसकी पुस्तक-चयन प्रक्रिया स्वतंत्र आलोचनात्मक विवेक के बजाय प्रचार-तंत्र से संचालित होने लगती है।

गहन पठन का संकट

वर्तमान समय में सूचनाओं की अत्यधिक उपलब्धता ने मनुष्य की एकाग्रता को प्रभावित किया है। विद्यार्थी और युवा पाठक अनेक माध्यमों से लगातार सामग्री ग्रहण करते हैं, परंतु लंबे समय तक किसी गंभीर रचना के साथ बने रहना कठिन अनुभव करते हैं। साहित्यिक आस्वाद के लिए केवल पहली पढ़त पर्याप्त नहीं होती। कविता के प्रतीक, उपन्यास की समय-संरचना और कहानी की व्यंजना कई बार पुनर्पाठ से खुलती है। जब पाठक रचना को केवल कथानक या "संदेश" तक सीमित कर देता है, तब उसकी कलात्मकता छूट जाती है। उदाहरण के लिए, किसी उपन्यास को केवल स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श अथवा राजनीतिक उपन्यास कह देना उसके शिल्प, भाषा और पात्र-निर्माण के विश्लेषण का विकल्प नहीं हो सकता। साहित्य के प्रति यह संक्षिप्त और निष्कर्षवादी दृष्टि आस्वाद को सीमित करती है।

भाषा और संदर्भ की दूरी

समकालीन हिंदी साहित्य में विविध बोलियों और लोक-सांस्कृतिक संकेतों का प्रयोग बढ़ा है। यह साहित्य की शक्ति है, क्योंकि इससे वह जीवन की वास्तविक बहुलता को अभिव्यक्त करता है। किंतु जिस पाठक का अनुभव-संसार उस भाषा या संस्कृति से दूर है, उसके लिए रचना के सूक्ष्म अर्थों तक पहुँचना कठिन हो सकता है। इसी प्रकार शहरी, अंग्रेज़ी-

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, August 2026 Impact Factor: 8.2

मिश्रित और तकनीकी शब्दावली से युक्त लेखन भी अनेक पाठकों को दूर कर सकता है। इसलिए भाषा का प्रश्न केवल अभिव्यक्ति का प्रश्न नहीं है; वह साहित्य तक समान पहुँच का प्रश्न भी है। शिक्षक, संपादक और आलोचक यदि संदर्भ-सहायता, शब्दार्थ और संवादपरक व्याख्या उपलब्ध कराएँ, तो यह दूरी कम की जा सकती है।

अस्मिता-विमर्श और वैचारिक ध्रुवीकरण

दलित, स्त्री, आदिवासी और क्वीयर साहित्य ने हिंदी साहित्य को अधिक न्यायपूर्ण और प्रतिनिधिक बनाया है। इन रचनाओं का आस्वाद करते समय पाठक को उनके अनुभवों की ऐतिहासिक और सामाजिक पृष्ठभूमि समझनी चाहिए। यदि कोई पाठक इन्हें केवल "राजनीति" कहकर अस्वीकार कर देता है, तो वह साहित्य की महत्त्वपूर्ण मानवीय संवेदना से वंचित रह जाता है। दूसरी ओर केवल लेखक की सामाजिक पहचान के आधार पर रचना का मूल्य तय कर देना भी पर्याप्त नहीं है। साहित्यिक मूल्यांकन में अनुभव की प्रामाणिकता के साथ भाषा, शिल्प, संरचना और कलात्मक प्रभाव का भी विचार होना चाहिए। दलित साहित्य के संदर्भ में ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अनुभव की सच्चाई और सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा को केंद्रीय माना है। अतः समकालीन साहित्य को पढ़ने के लिए सहानुभूति और आलोचनात्मक विवेक, दोनों आवश्यक हैं।

आलोचना की सीमाएँ

साहित्य के आस्वाद को विकसित करने में आलोचना की निर्णायक भूमिका है। आलोचना पाठक को रचना के निहितार्थों, कलात्मक उपलब्धियों और सीमाओं तक पहुँचने की दृष्टि देती है। किंतु आज अनेक समीक्षाएँ प्रचारात्मक, संक्षिप्त या गुटबद्ध दिखाई देती हैं। कई बार आलोचना लेखक-परिचय अथवा प्रशंसा तक सीमित रह जाती है। अकादमिक आलोचना की दुरूह भाषा भी सामान्य पाठक को उससे दूर कर सकती है। आलोचना का उद्देश्य केवल निर्णय सुनाना नहीं, बल्कि पाठकीय संभावनाएँ खोलना है। नामवर सिंह के अनुसार आलोचना साहित्य के साथ जीवंत संवाद है; वह रचना के अर्थों को स्थिर नहीं करती, बल्कि उन्हें नए संदर्भों में सक्रिय करती है। समकालीन हिंदी में ऐसी आलोचना की आवश्यकता है जो स्वतंत्र, प्रमाणनिष्ठ, संवेदनशील और सुगम हो।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, August 2026
Impact Factor: 8.2

समाधान के संभावित मार्ग

आस्वाद की समस्या का समाधान केवल पाठक से अपेक्षा करके नहीं किया जा सकता। इसके लिए शिक्षा-संस्थानों, साहित्यिक पत्रिकाओं, प्रकाशकों, आलोचकों और डिजिटल मंचों की साझी भूमिका आवश्यक है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में साहित्य-अध्ययन को परीक्षा-केंद्रित व्याख्या तक सीमित नहीं रखना चाहिए। पाठ, पुनर्पाठ, सामूहिक वाचन, नाट्य-प्रस्तुति, लेखक-संवाद और खुली चर्चा से विद्यार्थी साहित्य के साथ आत्मीय संबंध बना सकते हैं। डिजिटल माध्यमों का रचनात्मक उपयोग भी किया जा सकता है। गंभीर पुस्तक-चर्चाएँ, पाठकीय पॉडकास्ट, विश्वसनीय वेब-पत्रिकाएँ, ऑडियोबुक और डिजिटल अभिलेखागार नए पाठकों तक गुणवत्ता-पूर्ण साहित्य पहुँचा सकते हैं। आवश्यक यह है कि तात्कालिक लोकप्रियता को साहित्यिक मूल्य का एकमात्र मानदंड न बनाया जाए। पाठकों को भी विविध प्रकार के साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। अलग-अलग क्षेत्रों, वर्गों, जातियों, लिंग-अनुभवों और पीढ़ियों के लेखन को पढ़ने से साहित्यिक दृष्टि व्यापक होती है। आलोचना को संवादपरक भाषा अपनानी चाहिए तथा रचना के सामाजिक अर्थ और कलात्मक पक्ष के बीच संतुलन बनाए रखना चाहिए।

निष्कर्ष

21वीं सदी के हिंदी साहित्य में आस्वाद की समस्या मूलतः बदलती पाठकीय संस्कृति की समस्या है। डिजिटल तात्कालिकता, बाज़ारवाद, गहन पठन की कमी, भाषिक दूरी, वैचारिक ध्रुवीकरण और आलोचना की सीमाएँ साहित्य को समझने की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। फिर भी यह समय साहित्य के लिए नई संभावनाओं का समय भी है, क्योंकि आज पहले की अपेक्षा अधिक विविध समुदाय अपनी भाषा और अनुभवों के साथ हिंदी साहित्य में उपस्थित हैं। साहित्य का स्वस्थ आस्वाद तभी संभव है जब पाठक रचना को धैर्य, संवेदना और आलोचनात्मक विवेक से पढ़े। साहित्य को केवल मनोरंजन, सूचना या वैचारिक नारे में सीमित न करके उसके कलात्मक और मानवीय विस्तार में ग्रहण करना चाहिए। गहरे, बहुपक्षीय और संवादधर्मी पठन की संस्कृति ही हिंदी साहित्य को उसकी व्यापक सामाजिक भूमिका के अनुरूप जीवंत बनाए रख सकती है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, August 2026
Impact Factor: 8.2

संदर्भ सूची :-

1. अभिनवगुप्त, अभिनवभारती, अनुवाद: रणेन्द्र कुमार शर्मा, दिल्ली: परिमल पब्लिकेशंस, 2004
2. भरतमुनि, नाट्यशास्त्र, संपादक: बाबूलाल शुक्ल शास्त्री, वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान, 2006
3. पांडेय, मैनेजर, साहित्य और इतिहास-दृष्टि, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2007
4. पालीवाल, कृष्णदत्त, उत्तर आधुनिकता और हिंदी साहित्य, नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2008
5. शुक्ल, रामचंद्र, चिंतामणि, भाग-1, वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा, 2011
6. सिंह, नामवर, कविता के नए प्रतिमान, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2010
7. सिंह, नामवर, वाद-विवाद-संवाद, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2002
8. वाल्मीकि, ओमप्रकाश, दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 2001